शिक्षण–आकलन योजना	कक्षा 4
पाठ / इकाई : पापा जब बच्चे थे , अवधारणा / थीम :.....	
सम्पूर्ण कक्षा समूह के लिए अधिगम उद्देश्य : समूह चर्चा के दौरान अपने तर्कों के आधार पर अपने विचार आत्मविश्वास के साथ व्यक्त कर पाना, कहानी को पढ़कर आनन्द लेना एवं स्वयं के अनुभवों से जोड़ना। तुकान्त शब्दों को समझना एवं खोजबीन करना। परिचित लोगों से बातचीत कर सूचना एकत्र करना एवं समूह में बताना। स्वयं प्रश्न बनाकर समाधान सोचना व खोजना। सम्बन्धों की समझ मज़बूत बनाना, सम्बन्धों के आधार पर लोगों को सम्बोधित कर सम्मान दे पाने की समझ बनाना। स्थान विशेष के कार्यों से अवगत होना। विभिन्न कामों से जुड़े व्यवसाय को समझना एवं उनके प्रति संवेदनशील होना। विशेषण एवं सर्वनाम की अवधारणा को समझना एवं प्रयोग करना। साक्षात्कार विधा से परिचित होना एवं साक्षात्कार हेतु प्रश्नों को बनाना एवं जानकारी एकत्र करनाा।	
शिक्षण योजना (1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)	सतत आकलन योजना
सामूहिक कार्य – बच्चों से सामूहिक रूप से बातचीत करना, जिसमें चर्चा हेतु निम्न प्रश्न होंगे– (1) आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं? (2) आपके पापा क्या काम करते हैं? (3) कौनसा काम आपको सबसे अच्छा लगता है? बच्चों के जवाबों को समेकित करके एक रूप प्रदान करना। काल्पनिक अभिव्यक्ति : बच्चों से पुलिस वाला, कुल्फी वाला, चौकीदार के बारे में पूछना और उनकी कल्पना करवाते हुए बच्चों को अपने विचार देने हेतु प्रेरित करना। उपसमूह में कार्य – कहानी को छोटे–छोटे उपसमूहों में पढ़कर समझना व शिक्षक द्वारा बीच–बीच में सभी उपसमूहों में आवश्यक मदद करना। एक बड़े समूह में कहानी का सही उतार–चढ़ाव तथा स्पष्ट उच्चारण के साथ पठन करवाना तथा नवीन संदर्भों व शब्दों के समझाने हेतु बातचीत करना। कहानी के काल्पनिक पक्ष को बच्चों के अनुभव से जोड़ने हेतु कहानी के प्रसंगों पर बातचीत करना। पढ़ी गई कहानी में से बच्चों की सबसे पसंदीदा घटना या प्रसंग को सुनना। पठित नवीन शब्दावली का वाक्यों में प्रयोग करवाना। खासियत की खोज – बच्चों से बातचीत करना कि आपकी कक्षा में कौन बच्चा किस काम में माहिर है? अपने दोस्तों की खासियत को लिखवाना व उनके नाम लिखवाना। अपने परिवार के संदर्भों में सदस्यों को हम क्या–क्या कहते हैं यह बातचीत करना व उनके नामों को जानते हुए उनके सम्बन्धों को जानना। अभिनय – पाठ में दिए गए विभिन्न दृश्यों जैसे– बस स्टैण्ड, बाज़ार, अस्पताल, मेला..... आदि का अभिनय करवाना। विभिन्न जानवरों का अभिनय करवाना। पाठ में आए विभिन्न पात्रों का व्यक्तिगत रूप से चित्रांकन कर संकलन तैयार करवाना तथा उन्हें पोर्टफोलियो फाइल में लगाना। शिक्षक द्वारा 4 से 5 बच्चों के उपसमूह बनाना तथा साक्षात्कार प्रपत्र पर चर्चा करते हुए अन्य व्यक्तियों जैसे– आइसक्रीम वाला, पुलिस वाला, ठेले वाला आदि का साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्नावली तैयार करवाना। उपसमूहों में किए गए कार्य का प्रस्तुतिकरण करवाना व प्रश्नावलियों का समेकन करते हुए	शिक्षक द्वारा आकलन • बच्चों से संवाद करते हुए उनका अवलोकन दर्ज़ करना। • उपसमूह में कार्य के दौरान उनकी स्थिति को अवलोकित करते हुए शिक्षक डायरी में नोट करना। • बच्चों के कार्य की जाँच करके टिप्पणी लिखना। बच्चों द्वारा परस्पर आकलन • बच्चों के उपसमूह द्वारा परस्पर आकलन करना। • परियोजना कार्य की जाँच करना। दिए गए अभ्यास कार्यों को

http://rajteachers.com/cce.php

साक्षात्कार हेतु एक नवीन प्रश्नावली तैयार करवाना।

उपसमूह में ही आस–पास से किसी ठेले/थड़ी वाले का साक्षात्कार लेने हेतु भेजना।

साक्षात्कार से मिले प्रमाणों का समूह में प्रस्तुतिकरण करवाना।

प्रस्तुतिकरण के दौरान एक–दूसरे उपसमूहों का आकलन करवाना। (बोर्ड पर प्रपत्र बनाकर बताया जाएगा।) जैसे–

परस्पर आकलन प्रपत्र

सूचक	हाँ	नहीं
समूह ने जानकारी को ठीक ढंग से प्रस्तुत किया।		
साक्षात्कार के लिए गए सभी प्रश्नों की जानाकरी ली गई		
समूह में आपस में तालमेल रहा।		

कहानी पर आधारित प्रश्नों पर सामूहिक रूप से बातचीत करना व बच्चों के विचारों को जानना।

व्यक्तिगत कार्य प्रथम समूह –

पुस्तक आधारित अभ्यास कार्यों को करवाना।

व्याकरण –

सर्वनाम शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करना।

अनुच्छेद देकर उसमें आए सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करवाना।

अनुनासिक व अनुस्वार युक्त शब्दों को बोर्ड पर लिखकर उच्चारण करवाना व ध्वनि विभेद पर कार्य करते हुए दोनों प्रकार के शब्दों की सूची बनवाना।

पाठ्यपुस्तक में से अनुनासिक व अनुस्वार युक्त शब्दों को छँटवाना व लेखन करवाना। (उपसमूह बनाकर यह कार्य करवाया जाएगा)

जाँचना और उचित दिशा निर्देश के साथ टिप्पणी को दर्ज करना।

उपसमूह–2 के लिए विशेष अधिगम उद्देश्य : पठन – मात्रायुक्त शब्दों को चित्र के साथ व स्वतंत्र रूप से पढ़ पाना। लघु व दीर्घ मात्राओं में ध्वनि विभेद कर उच्चारण कर पाना। शब्दों व वाक्यों का पठन कर पाना।

लेखन – मात्रायुक्त शब्दों का लेखन कर पाना। सीखी गई मात्राओं का अनुप्रयोग कर पाना।

शिक्षण योजना (1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)	सतत आकलन योजना
बच्चों को मात्रायुक्त शब्दों के चित्र कार्ड उपलब्ध करवाना व दो–दो के जोड़ों में इनका पठन एक–दूसरे की मदद करते हुए करना। जैसे– (–छतरी , –मटका) (मात्रायुक्त शब्द कार्ड माला–ताला, बाजा–छाता, नीला–पीला) मात्रायुक्त शब्द कार्ड द्वारा पठन करवाना। (व्यक्तिगत रूप से) बच्चों को मात्रायुक्त शब्दों व सरल वाक्यों को पढ़ने का अभ्यास करवाना तथा इसके लिए आवश्यक सामग्री का उपयोग करना। दिए गए चित्र के अनुसार मात्राओं का प्रयोग करते हुए वाक्यों को पूरा करवाना।	• बच्चों द्वारा पढ़ने से सम्बन्धित स्थितियों को नोट करना। • बच्चों के कार्यपत्रक की जाँच करना।

http://rajteachers.com/cce.php

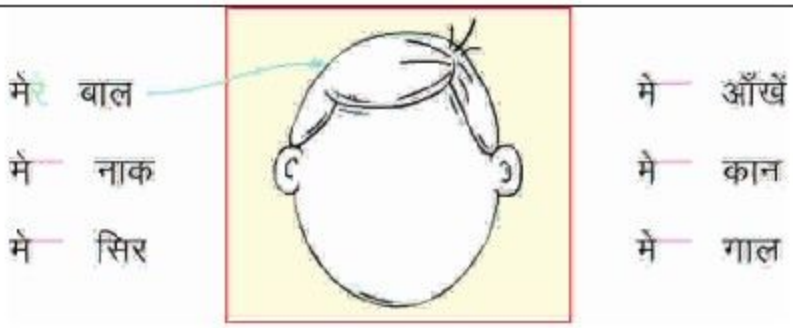

अखबार/पत्र–पत्रिकाओं/पाठ्यपुस्तक/पुस्तकालय की पुस्तकें आदि में से सीखी गई मात्राओं से युक्त शब्दों को खोजकर लेखन करवाना।

उपसमूह में मात्रायुक्त शब्दों को एक–दूसरे की मदद से पढ़वाना, सुनना और श्रुतलेख करवाना।इ की मात्रा (ि) वाले शब्द – ए की मात्रा (े) वाले शब्द

श्रुतलेख करवाना मात्रायुक्त शब्दों का।

अखबार/पत्र–पत्रिका/पाठ्यपुस्तक में से सीखी गई मात्राओं के शब्दों को छाँटकर लिखने को देना।

छोटे उपसमूह बनाकर – मात्राओं के ध्वनि भेद को लेकर एक–दूसरे से शब्दों को पढ़वाना एवं सुनने का कार्य देना।

- श्रुतलेख के माध्यम से लिखने के कौशल को देखना।
- कक्षा कार्य की कॉपी चैक करना।

बच्चों के सीखने की प्रक्रिया एवं उपलब्धि के सन्दर्भ में **दिनांक :**

1. कार्य के दौरान बच्चों की सहभागिता की स्थिति के बारे में :– कार्य के दौरान लगभग सभी बच्चों की प्रत्येक कार्य में सहभागिता रही। सभी ने कहानी को पढ़ने में रुचि दिखाई और आनन्द लिया। बातचीत में अधिकांश का उत्साह दिखाई दिया। अपने अनुभव एवं विचारों को समूह में रखा।
2. बच्चों को आ रही कठिनाई के बारे में :– समूह नं. 2 में ई की मात्रा पर कार्य करते समय जहाँ दोनों (आ व ई) मात्राएँ एक साथ आ जाती उसे समझने में कठिनाई हुई। जिसके लिए चित्र कार्ड से ज्यादा मदद ली गई।
3. बच्चों के अधिगम उपलब्धि के बारे में :– लक्ष्य के अनुसार मात्राओं को पहचानना और सही उच्चारण के साथ पढ़ने और स्वयं उनके प्रयोग से शब्द बनाने का कार्य उपसमूह – 2 के बच्चे करने लगे हैं।

उपसमूह –1 पाठ को स्वयं पढ़कर उसमें नीहित मुख्य बातों को समझे एवं प्रश्नों के उत्तरों को विस्तार के साथ कर पाए।

योजना का कक्षा–कक्ष में क्रियान्वयन ; नमूना

इस योजना के क्रियान्वयन के दौरान सभी गतिविधियों को ठीक से करवाने में लगभग 12 – 13 दिन लगे। यहाँ पर सभी गतिविधियों से संबंधित क्रियान्वयन की प्रक्रिया को नहीं दिया जा रहा है, कुछ गतिविधियों के क्रियान्वयन से संबंधित प्रक्रियाओं का उल्लेख किया जा रहा है जिससे कि शिक्षक साथियों को मदद मिल सके।

कक्षा – कक्षीय प्रक्रिया

'पापा जब बच्चे थे' कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानी है। यह बच्चों के जीवन से जुड़ी हुई एक मज़ेदार कहानी है। जिसमें पापा जब छोटे थे तो उनसे अकसर पूछा जाता था कि वह बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं? तब हर बार उनका अलग–अलग जबाव होता था। जिन–जिन के सम्पर्क में वे आते और

http://rajteachers.com/cce.php

उनके काम के बारे में वे जानते तो उसी काम को करने की उनकी हर बार उत्सुकता बनती जाती। इस उम्र के बच्चों के साथ भी ऐसा ही होता है, वे वास्तव में स्वयं नहीं जानते कि आखिर वे क्या बनना चाहते हैं, लेकिन अकसर वे अपने परिवार के लोगों की बातों को ध्यान से सुनते हैं, और उनके द्वारा की जा रही अपेक्षा को ही अपना मकसद बनाने लग जाते हैं। लेकिन यह कहानी कुछ हटकर है जिसमें बच्चे की वास्तविक स्थिति को बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सामूहिक कार्य : समूह में बातचीत

जब मैंने इस पाठ की योजना बनाई तो बहुत से सवाल मेरे मन में भी उभरे और मैं भी कहानी को पढ़ते–पढ़ते अपने बचपन की मनःस्थिति पर एक बार फिर से गोते लगाने लगी। खैर, कक्षा में जाने के बाद कक्षा में उपस्थित सभी बच्चों के चेहरों को मैंने देखा, मेरे इस तरह से देखने पर बच्चों के मन में भी बहुत से सवाल उमड़ने लगे। जैसे – आज क्या करेंगे? क्या कोई कहानी या कविता सुनाएंगे या पहले किए काम पर सवाल तो नहीं पूछेंगे....आदि–आदि। मैंने बच्चों की हैरत भरी खामोशी और उमड़ते प्रश्नों की लड़ियों को तोड़ते हुए गुस्ताखी की, और बच्चों को संबोधित करते हुए पूछा कि–चलो आज कुछ बात करते हैं और तुम्हारे मन की बात को भी जानते हैं। सब तैयार हो गए।

मैंने पूछा– एक–एक कर बताओ कि तुम बड़े होकर क्या–क्या बनना चाहते हो ?

करन , अरुण, मीनू ,मनीषा ,सीमा, चंचल और पूजा ने कहा कि वे 'डॉक्टर' बनना चाहते हैं।

निशा, नेहा, एकता टोपिया, एकता बिवाल और मंजू ने कहा कि वे टीचर बनना चाहते हैं। विरेन्द्र और अन्नू पुलिस बनना चाहते हैं।

किशन फौजी और पायल का सपना है कि वह इंजीनियर बनेगी।

अन्नू के पुलिस बनने की बात कहने के साथ ही अधिकांश बच्चे बोल उठे कि ये तो संध्या की तरह आईपीएस बनेगी, है ना! अन्नू ठीक, चंचल ने कहा।

अन्नू ने हँसकर जवाब दिया– हाँ, क्यों नहीं बन सकती ? मेहनत करुँगी, और मुझे तो पहले से ही पुलिस का काम अच्छा लगता है इसलिए मैं बनना चाहती हूँ।

अन्नू ने किशन से पूछा– लेकिन किशन तुम फौजी क्यों बनना चाहते हो, किशन के कुछ कहने से पहले ही मीनू तपाक से बोली अरे! ये तो फौज वाली कोई पिक्चर देखकर फौजी बनने की सोच रहा होगा। किशन ने कहा– ' हाँ तो, मुझे फौजी का काम अच्छा लगता है, इसलिए फौजी बनना चाहता हूँ।'

इसी बातचीत को आगे बढ़ाते हुए मेरे द्वारा दूसरा प्रश्न पूछा गया ' कि आपके पापा क्या–क्या काम करते हैं?

जिसमें से सभी के द्वारा बताया गया। कुछ बच्चों के पापा खाना बनाने का काम करते हैं, तो कुछ के मजदूरी, कुछ के ड्राइवर हैं, कुछ के ऑफिस में जाते हैं, लेकिन उन्हें पता नहीं था कि वहाँ पर वह क्या काम करते हैं, अरुण के द्वारा कुछ नहीं बताया गया उससे मैंने पूछा तो वह बड़ी मुश्किल से धीमी आवाज़ में बोला – 'मिस्त्री'। मेरे द्वारा उसके साथ बात की गई कि 'नहीं, कोई काम छोटा और बड़ा नहीं होता है। काम कोई सा भी हो उसके लिए मन में सम्मान होना चाहिए।' (इस दौरान अन्य सभी बच्चे भी गंभीरता के

http://rajteachers.com/cce.php

साथ इस बात को सुन रहे थे।) मेरी बात के खत्म होते ही नेहा ने कहा – मेरे पापा भी पेंट का काम करते हैं, वह भी तो मजदूरी ही होती है, ना, दीदी। मैंने हाँ, में सिर हिलाया।

फिर तीसरा प्रश्न पूछा – कि 'आपको इन सब कामों में से सबसे अच्छा काम कौन–सा लगता है?' इस पर अधिकांश बच्चों का जवाब वही रहा, जो उन्होंने पूर्व में स्वयं के लिए बताया था।

> अवलोकन अभिलेखन : बातचीत के दौरान अपने काम करने के सपने को बताने में सभी बच्चों को उत्सुकता थी। अपने पापा के काम को बताने में अरुण को शर्म आ रही थी। काम के सन्दर्भ में बात करने पर सभी बच्चों के द्वारा सहमति जताई गई कि सभी कामों का सम्मान करना चाहिए।
>
> पायल, पूजा, अन्नू, किशन, निशा ने आत्मविश्वास के साथ अपने सपने को कहा।
>
> अन्य बच्चों ने थोड़ा शर्माकर अपने सपने को शेयर किया। मंजू ने शायद पहले कभी सोचा नहीं था, इसलिए बहुत वक़्त लगाने के बाद धीरे से टीचर बनने की बात उसने कही।

काल्पनिक अभिव्यक्ति :

बच्चों को कुछ देर के लिए से पुलिस वाला, कुल्फी वाला और चौकीदार के काम के बारे में सोचने के लिए कहा, इस कार्य में भी सभी बच्चों को सम्मिलित किया गया।

करन ने पूछा – 'दीदी क्या तीनों के बारे में सोचें ?' मैंने बच्चों से ही पूछा कि वे क्या करना चाहते हैं, आपस में बात करके मुझे बता दें। तब सभी बच्चों ने आपस में बात करते हुए तय किया कि अभी एक–एक पात्र के बारे में ही सोच सकते हैं, इसमें भी जिसे जो अच्छा लगे उसके बारे में बता सकता है।

कुछ देर सोच–विचार करने के बाद बच्चों ने अपनी–अपनी बात बतानी प्रारम्भ की।

विरेन्द्र – 'पुलिस वाले खाकी वर्दी पहनते हैं, उनके पास एक डंडा और पिस्तौल होती है, जिससे वे बदमाशों और चोरों को पकड़ कर जेल में बंद कर देते हैं।'

अन्नू– ' कुल्फी वाला अपने ठेले में मटके रखता है जिसे वह लाल कपड़े से बाँधे रखता है, और उसके अंदर खूब सारी कुल्फियाँ रखता है। वह दिन भर ठेले को घुमाता रहता है, कभी तो उसकी ब्रिकी अच्छी हो जाती है, कभी कम होती है, अब सभी बच्चे रोज–रोज तो कुल्फी खा नहीं सकते हैं, क्योंकि उनके पास पैसे कहाँ होते हैं।'

चंचल– ' हमारी गली में कुल्फी वाला शाम होने के बाद आता है उसने अपने ठेले में एक रस्सी में घंटी लगा रखी है जिसे वह बजाता है, उसकी घंटी की आवाज़ सुनकर मुझे कुल्फी खाने का मन कर जाता है।'

एकता बिवाल – ' है ना, पुलिस वाले बहुत रौबदार होते हैं, उनके कपड़े है, ना, मुझे बहुत अच्छे लगते हैं, उनकी गाड़ी में ना नीले रंग की बत्ती भी लगी होती है, मैं तो जब पुलिस वालों को देखती हूँ, तो घबरा जाती हूँ।'

इसी प्रकार अन्य बच्चों ने भी अपनी समझ के अनुसार बताया। चौकीदार के बारे में किसी बच्चे द्वारा नहीं बताया गया।

http://rajteachers.com/cce.php

अवलोकन अभिलेखन : इस कार्य के दौरान सभी बच्चों ने अपने पूर्व के अनुभव एवं अवलोकन को जोड़ते अपने विचारों को बताने की पहल की। एक साथ निर्णय करने में सभी बच्चों ने पायल की बात को ध्यान से सुनकर उसमें हामी भरी। पायल किसी भी प्रकार के कार्य में समूह में लीडिंग रोल को बखूबी निभाती है।

उपसमूहों में कार्य : (कक्षा में नामांकित सभी बच्चों के साथ)

पुस्तक में से कहानी को पढ़कर समझने के लिए कक्षा – स्तर व कक्षा – स्तर से नीचे के स्तर के बच्चों के मिश्रित उपसमूह बनाकर मैंने कहानी को मिलकर पढ़ने और उसकी खास बातों को नोट करने को कहा। कुल पाँच उपसमूह बनाए गए। उपसमूह में कार्य के दौरान मेरे द्वारा अवलोकन का कार्य किया गया।

सभी समूहों के द्वारा पढ़ने का कार्य कर लेने के बाद समूह में प्रस्तुत करने का कार्य किया गया। जिसमें लगभग सभी समूहों के द्वारा पापा के बचपन में क्या–क्या बनने की इच्छाएँ हुआ करती थीं, उसको चिह्नित किया गया। कहानी के बारे में उनके अपने विचार रहे। सभी ने कहा कि उनको कहानी को पढ़ना अच्छा लगा। बारी –बारी से पैराग्राफ बाँटकर सभी समूह के बच्चों को पढ़वाया।

निशा ने बताया कि उनके समूह में थोड़ा तालमेल कम रहा। पूजा बार–बार खुद ही ज्यादा पढ़ने को ले रही थी।

अवलोकन –अभिलेख : उपसमूहों में कार्य के दौरान मनीषा पहले पढ़ने में संकोच कर रही थी, पायल उसे बार–बार पढ़ने के लिए प्रेरित कर रही थी। जहाँ जिस शब्द में वह अटक जाती वह उसे प्यार से समझाती व उसका उच्चारण बता देती। जिससे मैंने देखा कि थोड़ी ही देर में वह सहज होकर पढ़ने का प्रयास करने लगी।

विरेन्द्र के द्वारा पढ़ने के दौरान अटकने में निशा चिढ़ जाती और जोर से कहती तुझे समझ में नहीं आता क्या कितनी बार बताएं ? इस पर मीनू समझाने लगती कि देख, पायल कैसे समझा रही है कोई बात नहीं, अब ठीक से पढ़ लेगा।

सभी समूहों में बच्चों का एक–दूसरे को सहयोग करना, स्वयं सुधार करने की पहल करना रहा।

जिन बच्चों को दिक्कत आ रही थी उनको सहयोग मिलने से और दूसरों को देखकर पढ़ने के प्रति रुचि बन रही थी और वे अपना पूरा प्रयास भी कर रहे थे।

पूजा व सोना अपने समूह में किताब को ध्यान से पढ़ते हुए खास बातों को चिह्नित करते जा रहे थे।

अन्नू और मीनू तल्लीनता के साथ पढ़ रहे थे।

खासियत की खोज (व्यक्तिगत कार्य)

बच्चों को मेरे द्वारा कहा गया कि– 'अब सभी बच्चे अपने–अपने खास दोस्त या सहेली का नाम लिखकर उसकी एक या दो खास बातें कागज पर लिख दें।' सभी को एक छोटा सा कागज का टुकड़ा दिया गया। कार्य करते समय सभी बच्चे सोचने लगे कि वह किस के बारे में लिखें? कुछ मुझसे पूछने लगे कि वे किस के बारे में लिखें, कुछ आपस में एक–दूसरे से कह रहे थे कि हम दोनों आपस में एक–दूसरे के बारे में लिख लेते हैं। इस समय थोड़ी देर कक्षा में चहल–कदमी हुई।

http://rajteachers.com/cce.php

सभी द्वारा लिख लेने के बाद कागज मुझे दे दिया गया, इस कार्य को करने में लगभग 15 से 20 मिनट लगे।

करन ने अरुण के लिए लिखा– यह किसी को मारता नहीं है।

मीनू ने एकता बिवाल के बारे में लिखा कि – वह उससे खूब मजाक करती है।

किशन ने अरुण के बारे में लिखा कि – जब वह हँसता है तो बहुत प्यारा लगता है, वह चुपचाप रहता है।

सोना ने पायल के बारे में लिखा कि – वह सबको बहुत अच्छी तरह से समझाती है और हर चीज़ याद रखती है। अन्नू के बारे में लिखा कि – अन्नू अपने दोस्तों को कभी नाराज़ नहीं करती है।

नेहा ने पूजा के बारे में लिखा कि – पूजा किसी से बात नहीं करती है।

पायल ने निशा के बारे में लिखा कि – निशा कभी भी मेरे बारे में बुराई नहीं करती है। निशा ने पायल के बारे में लिखा कि – पायल पढ़ाई में ज्यादा ध्यान देती है।

अन्य सभी बच्चों ने भी अपने दोस्तों के बारे में खास बातों को लिखा।

अवलोकन अभिलेख : चंचल और एकता टोपिया ने अपने दोस्तो की खास बात को लिखने की बजाए वह क्या बनना चाहते हैं, को लिखा। ये दोनों प्रश्न को ठीक से नहीं समझ पाए।

मंजू को अभी स्वयं लिखने में परेशानी है, उसे स्वयं वाक्य सृजन करने पर ही ज्यादा कार्य करवाने की आवश्यकता है, साथ ही मात्रा आदि की पहचान करवाना भी आवश्यक है।

विरेन्द्र, नेहा बुनकर और मनीषा को भी लेखन कार्य में मात्राओं की स्पष्टता व वाक्य सृजन पर कार्य करवाने की आवश्यकता है।

उपसमूह 1 व उपसमूह 2 के साथ पृथक–पृथक रूप से कार्य करवाने के लिए मेरे द्वारा बच्चों को दो समूह में बाँटा गया। चूंकि इस कक्षा में चार बच्चे ही ऐसे हैं, जिनको मात्रा से संबंधित अवधारणा एवं प्रयोग से कार्य प्रारंभ करने की आवश्यकता है, अतः इन चार बच्चों को मैंने अपने साथ जोड़ा और अन्य बच्चों को पुस्तक से कहानी को व्यक्तिगत रूप से पढ़ते हुए उसके अभ्यास 'पढ़ो, समझो और लिखो' के प्रश्न संख्या 4 से 9 को करने के लिए कहा। इस कार्य को करने से पहले मेरे द्वारा दो–दो बच्चों को साथ मिलकर प्रत्येक प्रश्न पर बातचीत करने को कहा गया, उसके बाद एक–दूसरे से बिना पूछे अपनी–अपनी कॉपी में इस कार्य को करने के लिए कहा गया था।

समूह की कार्य की स्थिति के बारे में ; ''इस समूह के साथ इस तरीके कार्य करवाने का अनुभव मेरा लगभग पाँच– छः माह का रहा है। समूह में कार्य करने की परम्परा, दिए गए कार्य को बिना किसी व्यवधान के निर्देशानुसार स्व संचालित होकर करने की खूबी इन सभी बच्चों में बनी है, लगातार प्रयास एवं जिम्मेदारी को देते रहने से बच्चों में निश्चित रूप से परिवर्तन आता है, यह मैं इन बच्चों के साथ जुड़े रहने से सीख पाई हूँ।''

उपसमूह 2

गतिविधि 1 : ध्वनि और लिपि चिह्न की पहचान

मेरे द्वारा पूर्व में बच्चों के साथ आ की मात्रा को बनने की प्रक्रिया पर कार्य करवाया गया । जिसके लिए मैंने बच्चों को बोर्ड पर समझाया, जिसमें आवाज़ को सुनकर पहचानना और बताना कि कैसी आवाज़ आ रही है। आवाज़ को पहचानकर बता पाने की स्वतंत्रता बच्चों को दी गई, जिससे कि उन्हें आवाज़ को रटना न पड़े क्योंकि मेरा मानना है कि अगर शिक्षक ही यह कार्य कर देगा तो बच्चों को स्वयं सोचने और बताने

http://rajteachers.com/cce.php

का मौका कहाँ मिलेगा, उसे खोजकर बताने में जो आनन्द आना चाहिए उसे हम शिक्षकों को नहीं छीनना चाहिए। बहुत सारे शब्दों के माध्यम से आवाज़ों को पहचानने का कार्य हुआ। पहले तो बच्चे स्वयं बताने में हिचक रहे थे लेकिन जैसे ही उन्हें अपने द्वारा बताने पर विश्वास हुआ तो चारों बच्चे ही बड़े आत्मविश्वास के साथ आवाज़ों को पहचानकर बताने लगे।

गतिविधि 2 : मात्रायुक्त वर्ण को पहचानना और लिखना

मौखिक कार्य करने के बाद एक कार्यपत्रक देकर उस पर कार्य करवाया गया। जिसे बाद में चैक करने के बाद बच्चों के पोर्टफोलियो में लगवाया गया। इसी प्रकार से अन्य और वर्णों के साथ आ की मात्रा को लगाकर पढ़ने और लिखने का कार्य बच्चों को घर पर भी करने को कहा गया।

अवलोकन अभिलेखन : दोनों ही गतिविधियों को करने में चारों बच्चों की रुचि बनी रही। मैंने पाया कि जब वे कार्य पत्रक पर कार्य कर रहे थे तो मुझे उन्हें समझाने में वक़्त नहीं लगा। बड़ी तल्लीनता के साथ कार्य को उनके द्वारा किया गया। मंजू बहुत खुश थी उसके चेहरे की मुस्कुराहट से बयाँ हो रहा था कि आज वह जो भी बता रही है वह सही हो रहा है। इससे उसका आतमविश्वास बढ़ा।

चैकलिस्ट में दिए गए सूचकों को भी इस दौरान भरा गया– (उदाहरण)

आकलन सूचक	मंजू	विरेन्द्र	नेहा	मनीषा
पठन कौशल : मात्राओं की ध्वनि एवं चिह्नों को समझते हुए पढ़ पाना।	ए	ए	ए	ए
लेखन कौशल :सीखे गए वर्णों से नवीन शब्द बना पाना। (मात्रा का प्रयोग करते हुए)	ए	ए	ए	ए

गतिविधि 3 : आ की मात्रा का दोहरान एवं ई की मात्रा को पहचान पाना।

इस कार्य को करवाने के लिए मेरे द्वारा मनीषा और मंजू तथा विरेन्द्र और नेहा का जोड़ा बनाया गया। उनको कार्डों पर बने चित्र के माध्यम से शब्द को पढ़ने के लिए दिया गया, और यह कार्य लगभग 15 मिनट तक चला (जिसके लिए लगभग 20–25 कार्ड बनाए गए थे।) दोनों जोड़ों के मध्य आधे–आधे कार्ड दिए थे, जिन्हें पढ़ने के बाद एक–दूसरे से बदलने का निर्देश पूर्व में ही दे दिया गया था।

http://rajteachers.com/cce.php

कुछ कार्ड के नमूने नीचे दिए गए हैं –

छतरी

मटका

मछली

माला

गतिविधि 4 : बिना चित्र के मात्रायुक्त शब्दों को पढ़ व लिख पाना।

इसी क्रम में बिना चित्र के मात्रायुक्त कार्डस् के ज़रिए पढ़ने का कार्य व्यक्तिगत रूप से करवाया गया। पहले बच्चों द्वारा स्वयं पढ़ा गया और बाद में मेरे द्वारा कार्ड दिखाकर प्रत्येक से पढ़वाया गया। जैसे –

छतरी	मटका	मछली	माला
काला	जाला	रीबन	कमीज

सीखने–सिखाने के दौरान आकलन :

1. मनीषा ने चित्र के द्वारा बिना अटके हुए पढ़ा। लेकिन बिना चित्र के द्वारा पढ़ने में उसे थोड़ा दिमाग पर ज्यादा जोर लगाना पड़ा।
2. विरेन्द्र ने आ की मात्रा वाले सभी शब्दों को सही व बिना अटके हुए पढ़ा। ई की मात्रा में थोड़ा बहुत अटका।
3. नेहा ने दोनों मात्राओं के शब्दों को सहजता से पढ़ा।
4. मंजू ने आ की मात्रा वाले शब्दों को सही पढ़ा ई की मात्रा वाले शब्दों में कहीं–कहीं थोड़ा ज्यादा समय लगाया।

गतिविधि 5 : ए की मात्रा से संबंधित कार्य

उपर्युक्त प्रक्रिया के द्वारा ए की मात्रा पर कार्य करवाते हुए कार्यपत्रक पर कार्य करवाया गया। जिसमें पहले कार्यपत्रक पर दिए गए चित्र पर बातचीत की गई और उसके बाद उस पर बच्चों से स्वयं बिना किसी की मदद से कार्य करवाया गया।

बातचीत के दौरान विरेन्द्र ने चित्र देखते ही अपनी प्रतिक्रिया दी – अरे दीदी ! इसकी आँखें कहाँ गई ? क्या आँख हमको बनानी हैं। मनीषा ने कहा कि– इसके तो नाक और मुँह भी नहीं हैं।

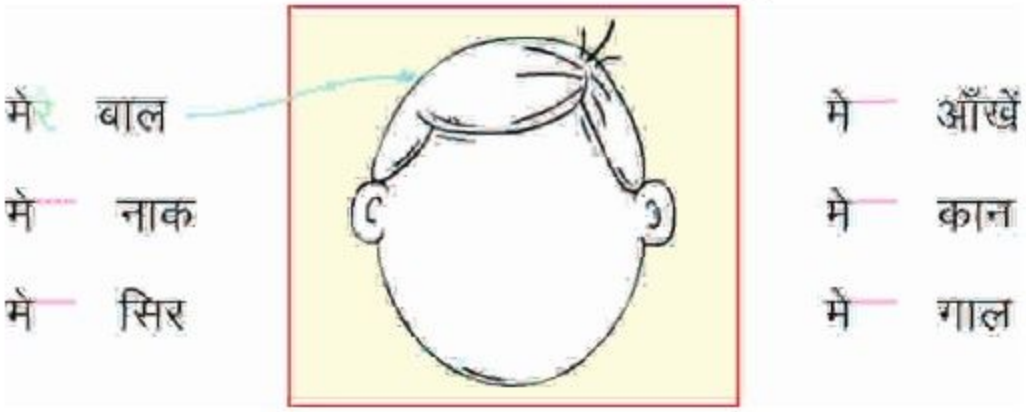

http://rajteachers.com/cce.php

नोट : इस प्रकार इस समूह को विशेष रूप से आ, ई व ए की मात्राओं पर अलग से कार्य करवाया गया। जिससे इनके कार्य में सुधार आया। बीच–बीच में पाठ में आए ऐसे शब्दों को छाँटने उन्हें लिखने और पढ़ने का कार्य भी किया गया। ऐसा करने से ये बच्चे पाठ से लगातार जुड़े रहे, क्योंकि सामूहिक एवं उपसमूहों में पाठ से संबंधित की जाने वाली गतिविधियों में इनको हमेशा जोड़े रखा गया।

आपने देखा कि पापा जब बच्चे थे, कहानी को किस प्रकार से प्रस्तुत किया गया, बच्चों के अपने स्वयं के अनुभवों से जोड़ते हुए, स्वयं पढ़कर उपसमूह में समझना, अपनी समझ को प्रस्तुत करना, दूसरे की प्रस्तुति को सुनना, उसपर अपनी प्रतिक्रिया देना आदि। इससे बच्चों का सीखने के प्रति जुड़ाव और रुझान की स्थिति बनी।

हर पल बच्चों की गतिविधियों का बारीकी से अवलोकन करना, उनके जवाबों , भावों से पता करना कि उनके दिमाग में क्या चल रहा है, सबकी बराबर की भागीदारी को सुनिश्चित करना, उनकी अपनी आवश्यकता के अनुसार कार्य करवाना जिससे कि जो बच्चे कक्षा स्तर से पीछे हैं, उनके साथ भी कार्य करते हुए स्तर पर लाने का प्रयास उसी कक्षा में रहते हुए किया जा सके।

बच्चों की प्रत्येक गतिविधि के अवलोकन को टिप्पणी के रूप में दर्ज़ किया जाता रहा इससे बच्चों के भाषायी कौशलों और आपस में कार्य करने की स्थिति एवं संलग्नता आदि के बारे में बहुत–सी बातें पता कर ली गईं।

शिक्षण–आकलन योजना	कक्षा– 1

पाठ/इकाई : चक चक चैया , अवधारणा/थीम : .....

सम्पूर्ण कक्षा समूह के लिए अधिगम उद्देश्य : 1. पहल और आत्मविश्वास के साथ अपनी बात समूह में रख पाना। 2. सुनी हुई कविता का हाव.भाव के साथ गायन कर पाना एवं कविता सुनकर एवं गाकर आनंद की अनुभूति कर पाना। 3. परिवेश में उपलब्ध चित्रों को पढने एवं उन पर बातचीत करने हेतु उत्सुक हो पाना। 4. शब्द को चित्र के साथ एवं बिना चित्र की सहायता से पढ़ एवं पहचान पाना। 5. शब्दों को सुनकर उनकी प्रथम ध्वनि को पहचान पाना एवं बोल पाना, मोटर शब्द में प्रयुक्त तीनों वर्णों की ध्वनि एवं चिह्न की पहचान कर पाना एवं मो/ट/र वर्णों से युक्त शब्दो को पढ़ पाना। अनुकरण से वर्ण एवं शब्द का लेखन कर पाना। 6. रुचि के साथ अधूरा चित्र पूरा कर पाना।

शिक्षण योजना (1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)	सतत आकलन योजना
1. सामूहिक कार्य – गतिविधि : समूह में बातचीत – बच्चों के साथ अनौपचारिक बातचीत के (साथ आज आप लोग विद्यालय कैसे आए , किसमें बैठकर)? साथ चक–चक चैया कविता पर कार्य प्रारंभ करना। सभी बच्चों की बात को सुना जाएगा जिससे कि सभी को मौका मिल सके। गतिविधि : कविता सुनना–सुनाना और पढ़ना – शिक्षक द्वारा कविता चक–चक चैया का उचित उतार–चढाव एवं अभिनय के द्वारा बच्चों को गवाया जाएगा। एक से अधिक बार गायन किया जाएगा।	• बच्चों से संवाद करते हुए उनका अवलोकन दर्ज़ करना। • पठन एवं चर्चा के दौरान

http://rajteachers.com/cce.php

गतिविधि : बच्चों को भी मौका देते हुए अन्य और कविता भी गाने को कहा जाएगा, जो उन्हें आती हो।

गतिविधि : पुस्तक में लिखी कविता को अँगुली लगाकर पढ़वाना।

गतिविधि : कविता पर बातचीत – कविता गायन एवं पठन के बाद कविता से सम्बन्धित बातचीत करना जिससे कि बच्चों को कविता को समझने में मदद मिल सके।

गतिविधि : परिचित चित्रों की पहचान और मिलान – बच्चों से यातायात के साधनों के दिये गये चित्रों के बारे में बातचीत करना कि उन्होनें इन में से किस–किस वाहन की सवारी की है और उन्हें कैसा लगा ?

पुस्तक में दिए अभ्यास में जिन वाहनों की सवारी की है उन्हें लाइन खींचकर मिलाने में बच्चों की मदद करना।

गतिविधि : मोटर शब्द को चित्र के साथ पढ़वाना। बिना चित्र के मोटर शब्द को पहचान कर पढ़ने को कहा जाएगा।

– सभी बच्चों को घेरे में बिठाकर उनके बीच में 'मोटर' एवं अन्य शब्द लिखे कार्ड्स रखकर एक–एक कर मोटर शब्द का कार्ड छाँटने को कहना।

– अलग–अलग अक्षरों के कार्डस् समूह में रखना और मोटर शब्द बनाने को कहना।

गतिविधि : खेल–खेल में पहचान

बच्चों को एक सीधी लाईन में खड़े होने को कहा जाएगा और ज़मीन पर छोटे–छोटे घेरे बनाकर उनके बीच में ऐसे शब्दों को लिखा जाएगा जिनमें मो प्रारंभ में आता हो जैसे – मोर, मोटा, मोटर, मोल, मोपेट.....। और एक–एक बच्चे से मोटर शब्द पर कूदने को कहा जाएगा।

गतिविधि : मो/ट/र अक्षरों की पहचान

– बच्चों से मो/ट/र शब्द का उच्चारण करवाना।

– मोटर शब्द में सबसे पहले बोली जा रही आवाज़ पर बच्चों का ध्यान केन्द्रित करवाना और उस आवाज को सुनकर ठीक से पहचानते हुए बताने को कहना। यह कार्य लगभग सभी बच्चों के साथ बारी–बारी से करवाया जाएगा।

– इसी प्रकार मोटर शब्द में से ही क्रमशः उसकी अन्तिम एवं मध्यम आवाज को भी सुनकर पहचानते हुए बताने को कहा जाएगा। (उच्चारण के साथ आवाज और आकार को पहचानने का कार्य बदलते क्रम में अलग–अलग समय में करवाया जाण्गा जिससे कि बच्चे उनको पहचान पाएं।)

व्यक्तिगत कार्य – कार्यपत्रक पर कार्य :

– बच्चों को शब्द लिखे कार्यपत्रक में से सही लिखे मोटर शब्द पर मोटर शब्द पर घेरा लगाने को देना।

– दोहरी आकृति में लिखे मोटर शब्द पर रंग भरने को देना।

मोटर मोटर

उपलब्ध चैकलिस्ट में भी बच्चों की स्थिति को दर्ज़ करना।

- खेल के दौरान बच्चों की भागीदारी, सहयोग, निर्देश समझने आदि से सम्बन्धित स्थितियों को नोट किया जाएगा।
- बच्चों द्वारा कार्ड से शब्द बनाने की प्रक्रिया का अवलोकन करते हुए टिप्पणी का लेखन करना।
- बच्चों के कार्यपत्रक की जाँच करके टिप्पणी लिखना।

http://rajteachers.com/cce.php

– डॉटेड से लिखे मोटर शब्दों पर पेंसिल फेरकर पूरा करने को देना और चित्र बनाने को कहना।

मोटर मोटर

– मोटर के चित्र के साथ विभिन्न शब्दों को लिखकर देना और चित्र के साथ सही शब्द को मिलाने एवं चित्र में रंग भरने को देना।

गतिविधि : मो/ट/र अक्षरों की पहचान कर मिलान करवाना।

– बच्चों से मो/ट/र शब्द के अक्षरों को विभिन्न शब्दों में से छाँटकर घेरा लगवाना। यह कार्य बोर्ड पर करवाना और अलग–अलग बच्चों से अलग–अलग वर्ण बोलकर घेरा लगाने को कहना। जैसे– मटर में से – ट का उच्चारण करके उस पर घेरा लगवाना।.....आदि।

– डिब्बा पास खेल द्वारा वर्ण को पहचानाकर बोलना।(एक डिब्बे में बहुत सी मो/ट/ र वर्ण की पर्चियाँ एवं मोटर शब्द की पर्चियाँ डालकर बच्चों को घेरे में बिठाकर ताली बजाते हुए एक–एक के पास डिब्बे को पास किया जाएगा और जैसे ही किसी बच्चे के पास ताली बन्द होगी उसे उस डिब्बे में से एक पर्ची निकालकर उसे पहचाने और बोलकर बताने को कहना ऐसे यह खेल जारी रहेगा, जब तक कि सभी बच्चों की बारी नहीं आ जाएगी।)

इसके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार बीच–बीच में पुस्तिका में दिए अभ्यास कार्यों को भी करवाया जाएगा।

• पुस्तक में किए गए कार्य की जाँच करना और उसमें टिप्पणी लिखना।

बच्चों के सीखने की प्रक्रिया एवं उपलब्धि के सन्दर्भ में दिनांक : .....

1. कार्य के दौरान बच्चों की सहभागिता की स्थिति के बारे में :– कार्य के दौरान लगभग सभी बच्चों की प्रत्येक कार्य में सहभागिता रही। सभी ने कविता गायन व अभिनय में आनन्द लिया। बातचीत में अधिकांश का उत्साह दिखाई दिया। अपने अनुभव एवं विचारों को समूह में रखा। चित्र को देखकर खुश हुए।
2. बच्चों को आ रही कठिनाई के बारे में :– मोनू एवं रिंकी को शब्दों के उच्चारण एवं वर्ण ध्वनि से सह–सम्बन्ध बनाने में कठिनाई महसूस हुई। सलमान परिचित शब्दों को अभी नहीं पढ़ पा रहा है।
3. बच्चों के अधिगम उपलब्धि के बारे में :– 1. वर्ण पहचान के कार्य में बच्चों ने स्वयं ही वर्ण की आवाज़ को बताया जो आश्चर्यजनक रहा। इन सभी ने पहली बार वर्ण पर कार्य किया। 2. खेल के दौरान एक–दूसरे का सहयोग करना एवं शब्द पहचान में मदद करना रहा।

योजना का कक्षा–कक्ष में क्रियान्वयन नमूना :

कक्षा – कक्षीय प्रक्रिया

गतिविधि 1 : समूह में बातचीत

शिक्षक ने कक्षा में प्रतिदिन की भाँति जाते ही बच्चों के साथ बातचीत शुरु की। बातों ही बातों में उन्होंने बच्चों से पूछना प्रारम्भ किया कि आप आज विद्यालय कैसे आए ?

http://rajteachers.com/cce.php

बच्चों ने अपने–अपने बारे में बताना शुरु किया। (हम पैदल आए हैं। साइकिल से आए हैं। पापा की मोटर साइकिल से आए हैं। दादा जी ने ट्रैक्टर से छोड़ा..... आदि।

कीर्ति – मेरे पापा के पास तो कार है, परन्तु मैं कार से नहीं आती हूँ।

शिक्षक – क्यों नहीं आती हो ?

कीर्ति – मेरा घर तो पास में ही है। (तभी रीतेश बोला मैं तो साइकिल से आया।)

मोहित – साइकिल पर किसके साथ आए ?

रीतेश – मैं मेरे बड़े भैया के साथ आया।

नेहा – मैं तो अपनी छोटी साइकिल से आई हूँ।

मोहित – मेरी मम्मी कहती है साइकिल धीरे–धीरे संभल कर चलाना चाहिए।

रीतेश – वरना तुम गिर जाओगी।

मोनू – आज तो मैं मोटर साइकिल से आया हूँ।

पुष्पा – तुम्हारा घर तो पास ही है तुम मोटर साइकिल से कैसे आए ?

मोनू – मैं अपने मामा के घर से आया हूँ।

तान्या – तुम्हें मोटर साइकिल से आना कैसा लगा ?

सीखने–सिखाने के दौरान आकलन– 1

इस गतिविधि के दौरान शिक्षक ने अपनी डायरी में नोट किया–

- रीतेश, कीर्ति, मोहित, नेहा, मोनू ने उत्साह के साथ बाचतीत में भाग लिया।
- मोहित की बात से लग रहा था कि वह अपने साथियों के प्रति संवेदनशील है।
- रीतेश का अपने भाई से लगाव है।
- मोनू यह जानता है, कि दूरी से आने के लिए हमें यातायात के किन साधनों का उपयोग करना चाहिए।
- आदित्य बातचीत के दौरान कंकड़ से खेल रहा था।
- तान्या को यह जानने की जिज्ञासा थी कि मोटर साइकिल पर बैठना कैसा लगा?

विशेष : *इस प्रकार शिक्षक ने कक्षा में बच्चों से बातचीत करते हुए सहज वातावरण बनाया। उन्होंने बच्चों को बोलने का अवसर दिया। उनके मन की बात को जानने का प्रयास किया। उन्हें अपने घर की बोली में बोलने का अवसर उपलब्ध कराया ताकि बच्चे बिना किसी संकोच के सीखने की प्रक्रिया में शामिल हो सकें।*

गतिविधि 2 – कविता सुनाना–सुनना और पढ़ना

शिक्षक ने ''चक–चक चैया'' कविता को उचित सुर, लय, ताल के साथ अभिनय करते हुए सुनाई और बच्चों से कविता की प्रत्येक पंक्ति को अभिनय के साथ पुनः दोहराने को कहा। इस कार्य को शिक्षक द्वारा दो बार किया गया।

इस दौरान शिक्षक ने देखा कि सभी बच्चे आनन्द के साथ कविता की पंक्तियों को दोहरा रहे थे कुछ बच्चे बीच–बीच में पंक्तियों को छोड़ते हुए गा रहे थे। अनुकरण से अभिनय भी कर रहे थे।

http://rajteachers.com/cce.php

कविता गायन के बाद शिक्षक ने कहा – "अब सब अपनी किताब खोलो और हम मिलकर कविता को पढ़ेंगे। पहले मैं कविता की एक–एक पंक्ति पढ़ूँगा आप मेरे साथ अँगुली रखकर दोहरान करना।

सीखने–सिखाने के दौरान आकलन–2

कीर्ति, मोहित, मोनू, तान्या स्पष्ट उच्चारण के साथ कविता की पंक्तियों को दोहरा रहे थे। रीतेश, नेहा एवं आदित्य बीच–बीच में शब्द छोड़कर पंक्तियाँ दोहरा रहे थे। रेखा ने मोटर शब्द की ओर संकेत करते हुए शिक्षक से पूछा यह लाल रंग में क्यों लिखा है ? सलमान कविता पठन के दौरान चुप बैठा था।

कार्य के दौरान ही शिक्षक द्वारा चैकलिस्ट में भी बच्चों की स्थिति को दर्ज़ किया गया –

1	2	3	4	5	6	7	8	9
कीर्ति	रीतेश	मोहित	नेहा	मोनू	आदित्य	तान्या	सलमान	रेखा
सुनना–सुनाना बोलना : 1.1 स्तर के अनुरुप सुनी गई सरल छोटी कविता को स्पष्ट शब्दों में दोहरा पाना।								
A	B	A	B	A	B	A	-	A
1.2 स्तरानुसार सुनी हुई कविता को सुर और लय के साथ सामूहिक रुप से सुना पाना।								
A	B	A	B	A	B	A	-	A

गतिविधि 3 : कविता पर बातचीत

कविता सुनने, दोहराने और पढ़ने के बाद शिक्षक के द्वारा कविता पर बातचीत की गई ताकि बच्चों को कविता समझने में मदद मिल सके। बातचीत के दौरान निम्न बिन्दुओं को शिक्षक ने पूर्व से ही योजना में लिखा हुआ था। (पुस्तक में दिए गए यातायात के साधनों का चार्ट दिखाकर शिक्षक ने बातचीत की।)

1. अब तक आप इनमें से किन–किन साधनों में बैठे हो ?
2. उन चीज़ों के नाम बताओ जिनमें पहिया होता है ?
3. सोचो अगर पहिया नहीं होता तो क्या होता ?
4. बारिश में आप क्या–क्या करते हो ?

सीखने–सिखाने के दौरान आकलन – 3 : शिक्षक की डायरी से (अवलोकन –अभिलेख)

- बातचीत में सभी बच्चे उत्साह से भाग ले रहे थे। ज्यादातर सभी को वाहनों की समझ है।
- कीर्ति ने कहा यदि पहिया नहीं होगा तो ट्रेक्टर कैसे चलेंगे?
- तान्या ने कहा मैं खेत पर कैसे जाऊँगी?
- मोनू ने कहा फिर तो साइकिल, बस, मोटर कुछ भी नहीं चल सकेंगे।
- नेहा ने कहा फिर मेरी साइकिल कैसे चलेगी ?
- तभी तो ! पहिया बहुत जरूरी है। आदित्य बैठा हुआ बोला अरे, नाव में तो पहिए की जरूरत ही नहीं होती।

सलमान – नाव कैसे चलती होगी ?

रीतेश – मैंने देखा है नाव तो आदमी डण्डे से चलाता है।

मोहित को छोड़कर सभी बच्चे विचार कर रहे थे।

http://rajteachers.com/cce.php

गतिविधि 4 – परिचित चित्रों की पहचान एवं मिलान – शिक्षक ने बच्चों को पुस्तक में दिए गए चित्रों को दिखाते हुए पूछा कि– इसमें किस–किस चीज़ के चित्र बने हैं ? सभी बच्चे एक साथ बताने लगे, फिर शिक्षक द्वारा कहा गया कि– ऐसे नहीं देखो, मैं बारी–बारी से सभी से पूछूँगी। फिर सभी द्वारा बारी–बारी से इस कार्य का सहजता के साथ किया। इसके बाद अपनी–अपनी पुस्तक के अभ्यास कार्य को किया।

गतिविधि 5 – मोटर शब्द की पहचान

चरण – 1 शिक्षक द्वारा रुनझुन में से पृष्ठ 3 पर दिया गया चित्र एवं शब्द दिखाया गया और पूछा कि यह किसका चित्र है ? बच्चों ने चित्र को देखते ही कहा – मोटर शिक्षक ने चित्र के साथ नाम भी पढ़कर बताया।

शिक्षक ने फ्लैश कार्ड्स के द्वारा अक्षरों को जोड़कर मो/ट/र =मोटर शब्द बनाने को कहा। कीर्ति ने अक्षरों को इस प्रकार से जोड़ा –

मो	ट	र

सलमान ने फ्लैश कार्ड के अक्षरों को इस प्रकार जमाया

मो	र	ट	

सलमान को शिक्षक ने मोटर लिखा शब्द कार्ड दिया और कहा अब इसे देखकर फिर से बनाओ। दो–तीन बार कार्डस में से अक्षरों को जोड़–जोड़कर सलमान ने अभ्यास किया।

सीखने के दौरान आकलन – 4

कीर्ति मोटर के अक्षरों को साथ लगाकर ताली बजाने लगी। कीर्ति को ताली बजाते देख आदित्य, तान्या, मोनू भी मोटर शब्द के फ्लैश कार्ड जोड़ने का प्रयास करने लगे। सलमान को थोड़ी अभ्यास की आवश्यकता हुई।

चरण – 2 अगले दिन शिक्षक ने बच्चों को 'मोटर' शब्द लिखा हुआ एक कार्यपत्रक बनाकर दिया और कहा कि जो सही लिखा है उस पर गोले का निशान लगाओ और मोटर का चित्र बनाकर रंग भरो।

नाम :..... दिनांक :.....

मोअर	मोरट	मौटर	मोटर	मोरर	मोटट
मोटर	मोपट	मोटर	मोटल	मोटर	मोलट

इस काम को करवाने के बाद शिक्षक ने पूछा कि अच्छा बताओ कि इसमें कितने मोटर सही लिखे हुए थे। सभी बच्चों ने सलमान सहित ने कहा कि 'चार' । यह सुनकर और कार्यपत्रकों को देखकर मिलान किया गया तो सभी को इस शब्द की पहचान हो गई थी। अतः इसके बाद उनको लिखने का कार्य यानि कि डॉटेड लाइन में पेंसिल फेरने का कार्य करने को दिया गया।यह कार्य सभी बच्चों के द्वारा रुचि के साथ किया गया। उनके चेहरे की चमक बता रही थी उनको लिखना भी आने लगा है।

मोटर मोटर मोटर मोटर

सलमान को शिक्षक के द्वारा दोहरी आकृति वाला कार्यपत्रक दिया गया, जिसमें उसने रंग भरने का कार्य किया।

मोटर ....

http://rajteachers.com/cce.php

सीखने के दौरान आकलन एवं अनुभव – 5

मोटर शब्द की पहचान उसके नाम को आवाज के साथ मिला पाना उसे पहचान कर अलग कर पाने के कार्य में आज सभी बच्चों का कार्य सराहनीय रहा। सलमान के द्वारा कल किए कार्य की सफलता मुझे आज नज़र आई। चित्र बनाने में भी सभी बच्चों की रुचि रही। मोनू और तान्या को छोड़कर सभी बच्चों ने अपनी कल्पना के अनुसार मोटर का चित्र बनाने का प्रयास किया जबकि इन दोनों बच्चों ने पुस्तक में दिए चित्र की तरह ही बनाने का प्रयास किया। लेखन के कार्य में बच्चों की रुचि ज्यादा दिखाई दी लगभग सभी बच्चों के द्वारा शब्दों में पेंसिल को बहुत ही सावधानी से फेरा।

गतिविधि 6 – सुनें और बोलें

मैंने सभी बच्चों को सामूहिक रूप से बिठाकर 'मोटर' शब्द में आने वाली आवाजों को ध्यान से सुनने को कहा। एक बार सुनाने के बाद पुनः बच्चों से कहा कि अब आप फिर से आवाज को ध्यान से सुनना और खुद बोलकर भी अपनी आवाज को ध्यान से सुनना। मैं फिर आपसे पूछुँगी कि कब कौन–सी आवाज आ रही थी ? इस बार सभी बच्चे खामोश हो मेरी आवाज को सुनने का प्रयास करने लगे। मेरे कहने पर स्वयं बोलते हुए अपनी–अपनी आवाज़ को सुनने लगे। सभी के एक–दो बार प्रयास कर लेने के बाद मैंने उनसे पूछा कि अब बताओ मोटर में सबसे पहली आवाज़ क्या आई ? सभी बच्चे समवेत स्वर में बोल उठे – मो..... .... पुनः मैंने मोटर मे सबसे आखिर में कैसे आवाज आई पूछा तो कुछ बच्चे ही बोल पाए – र.....। आज

तीन–चार बार बच्चों के साथ मोटर शब्द की पहली और अन्तिम ध्यनि को बोलने और पहचानने का कार्य किया। साथ ही फ्लैश कार्ड में से मेरे द्वारा बच्चों से कभी र तो कभी मो वाला वर्ण कार्ड भी माँगा गया, जिससे कि मैं स्पष्ट हो पाऊँ कि किस–किस को आवाज के साथ–साथ इन वर्णाकृतियों की भी पहचान हो पाई है?

इस कार्य के दौरान कीर्ति ने पूछा कि दीदी! बीच वाली आवाज़ को क्यों नहीं पूछ रही हो? मुझे तो वह आवाज़ भी आ रही है। और स्वयं ही उसने बताया कि बीच की आवाज़ ट है। और हामी में मुझसे पूछा कि सही है न ! इस प्रकार आज की कक्षा में अक्षर पहचान पर कार्य हुआ सभी बच्चे कार्य के प्रति सतर्क दिखाई दिए।

गतिविधि 7 – और भी नाम

पूर्व दिवस में मोटर शब्द की पहली और अंतिम ध्वनि पर किए कार्य को एक बार दोहरान करने कार्य किया ये दोनों आवाज़ें सभी बच्चों को याद थीं। आज शब्द की मध्य ध्वनि/आवाज़ के बारे में बात की और उसे ध्यान से सुनकर पहचानने को कहा तो लगभग सभी बच्चों ने ट की आवाज़ को स्पष्टता के साथ बोलने का प्रयास किया।

http://rajteachers.com/cce.php

इसके बाद बच्चों से मो, र, ट की आवाज से और कौन–कौन से नाम हो सकते हैं सोचकर बताने को कहा गया। इस कार्य में भी सभी बच्चों का उत्साह देखने लायक था। सभी सोचने का कार्य अपने–अपने तरीके से कर रहे थे।

सीखने–सिखाने के दौरान आकलन – 6

गतिविधि के दौरान बच्चे शब्द को बोल–बोल कर उच्चारित कर रहे थे। घर, कक्षा–कक्ष, आसपास की वस्तुओं के नामों का उच्चारण करके देख रहे थे और यह जानने का प्रयास कर रहे थे कि मो, ट, र किन–किन शब्दों में आ रहा है।

कीर्ति, मोहित, सोहन, तान्या, रिंकी, मीना आदि ने काफी वस्तुओं के नाम बताए।

रीतेश, मोनू द्वारा ट, र ध्वनि वाले 2–3 शब्द ही बताए गए। त व ट के उच्चारण में अन्तर नहीं कर पा रहे थे।

नेहा खुद तो शब्द सोचकर बता ही रही थी साथ में अन्य बच्चों की भी मदद कर रही थी।

पुस्तक में दिए गए अभ्यास कार्यों के अतिरिक्त कुछ और कार्य पत्रकों पर भी इस दौरान कार्य करवाया गया।

कार्यपत्रक–1 नाम : चाँदनी

मोटर शब्द की पहचान कीजिए और घेरा लगाइए –

कार	मोटर		ऊँट
मोटर	चक	मोटर	मोल
रेल	मोर	बस	मोपेट

शिक्षक टिप्पणी – मोटर शब्द की पहचान है।

http://rajteachers.com/cce.php

कार्यपत्रक–2 नाम : रिंकी

पहचानो और घेरा लगाओ –

मो पर

सागर मोहन समोसा मोरनी अनमोल

ट पर

टमाटर फाटक मटका खाट

र पर

रथ औरत अखबार रमजान

शिक्षक टिप्पणी – मो व र अक्षर की पक्की पहचान है। ट की पहचान पर पुनः कार्य की आवश्यकता है।

कार्यपत्रक –3

अक्षरों का मिलान कीजिए –

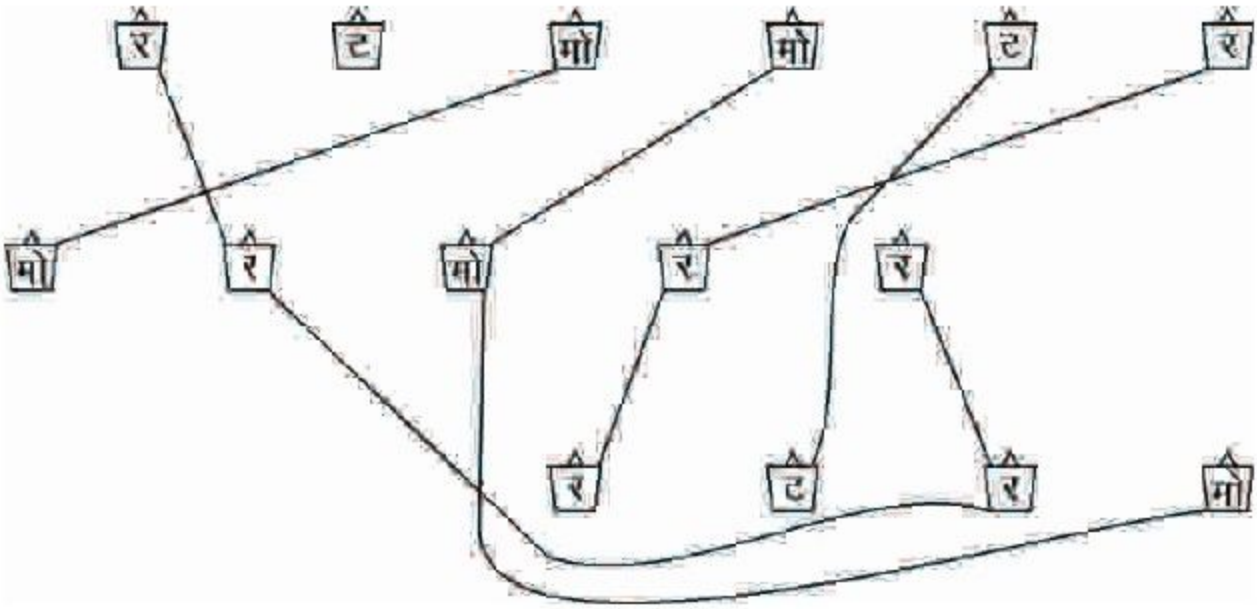

शिक्षक डायरी से : सीखने–सिखाने के दौरान आकलन– 7

- तान्या, आदित्य, पुष्पा द्वारा अक्षरों की पहचान कर मिलान किया गया।
- सलमान, मोनू, रीतेश द्वारा अक्षरों की पहचान में थोड़ा सी दोहरान कराया गया।
- नेहा को अक्षरों की पहचान करने की आवश्यकता है।
- तान्या द्वारा सभी अक्षरों को पहचान कर मिलान करने का अच्छा प्रयास किया।

http://rajteachers.com/cce.php